ज्ञानविविधा
कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
Vol.-1; Issue-5 (Oct.-Dec.) 2024
Page No.- 20-23
©2024 Gyanvividha
www.journal.gyanvividha.com

डॉ. इष्टदेव ओझा

Corresponding Author :

डॉ. इष्टदेव ओझा

अयोध्या में जैन एवं बौद्ध धर्म

करोड़ो हिन्दुओ की आस्था एवं विश्वास का केंद्र अयोध्या उ0प्र0 के फैजाबाद के समीप सरयू नदी के तट पर स्थित है । यह भगवान राम की पुण्य भूमि होने के कारण इतिहास एवं साहित्य में अत्यन्त प्रसिद्ध है । छठी शताब्दी ईसापूर्व विश्व के अनेक देशों की तरह भारत में भी सामाजिक एवं बौद्धिक आन्दोलनों के प्रमाण मिलते हैं । चीन में कन्फ्यूशियस ईरान मे जरथ्रुस्ट तथा यूनान में पाइथागोरस बौद्धिक आन्दोलन की तरह अयोध्या में भी जैन एवं बौद्ध धर्म का प्रसार हो रहा था । गौतम बुद्ध एवं महावीर दोनो ही सुधारवादी थे जिनका उद्देश्य था मानव मात्र के लिये कल्याणकारी सरल आचार मार्ग की प्रतिष्ठा करना था ।

जैन धर्म के 24वें तीर्थकर महावीर ने श्रावस्ती में निवास किया था । महावीर ने कठोर तप का मार्ग अपनाया था । कल्प सूत्र तथा आचरांग सूत्र में महावीर के उपदेशो का संग्रह है । जैन धर्म में अष्टमंगल पाठ[1] की व्यवस्था की गई है । महावीर ने ज्ञान के महत्व पर बल दिया है । जब जीव अपने नैसर्गिक शुद्ध स्वरूप को पा लेता है तो इसमें अनन्त चतुष्टय, अनन्त ज्ञान, अनन्त वीर्य, अनन्त श्रद्धा, अनन्त शान्ति की उत्पत्ति होती है । यही कैवल्य की अवस्था है ।

अयोध्या नगरी का जैन धर्मानुयायियों से विशेष सम्बन्ध था । जैन साहित्य में अयोध्या नगरी का नाम साकेत, इक्ष्वांकूभूमि, रामपुरी, अपराजिता , विनीत, सुकोशला आदि उल्लेखित है ।[2] जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का जन्म भी इक्ष्वाकुभूमि (अयोध्या) में हुआ था । इसीलिये इन्हे "कोशलीय"

कहा गया है ।[3] अयोध्या में उत्पन्न ऋषभदेव अनेक वर्षो तक राज्य ग्रहण करने के पश्चात भरत का राज्याभिषेक कर श्रमण धर्म में दीक्षा ग्रहण किया । प्रारम्भ में सचल और बाद में अचलवर्ती रहे और पूरिमताल (अयोध्या का उपनगर) में कैवल्य प्राप्त किया अन्ततः कैलाश पर्वत पर निर्वाण पाया । यहां बड़ी धूम-धाम से उनकी अस्थियों और चैत्यों पर स्तूपों का निर्माण किया गया ।[4]

जैन ग्रन्थों में 24 तीर्थकरों की परम्परागत सूची दी गई है ।[5] डा0 जगदीश चन्द्र जैन का मत है कि उनमें से अधिकांश तीर्थकरों का जन्म इक्ष्वाकु वंश में अयोध्या हस्तिनापुर, मिथिला या चम्पा में हुआ था । जैन आदि पुराण के अनुसार सभी तीर्थंकर कालानुक्रम से अयोध्या में जन्म लेते है और यही राज्य करते है ।[6] परन्तु ऐतिहासिक विश्लेषण से यह ज्ञात होता हैं कि केवल 5 तीर्थकर का जन्म अयोध्या में हुआ था जिनके 5 मन्दिर अद्यतन विद्यमान है, यथा-आदि नाथ का मंदिर, अजितनाथ का मंदिर, अभिनन्दन नाथ का मंदिर, सुमन्त नाथ का मंदिर, अनन्त नाथ का मंदिर । इन समस्त मंदिरों में कुछ चरण चिन्ह बने हुये है । ऐसा कहा जाता है कि ये सभी जैन तीर्थकरों के चरण चिन्ह हैं जिनका दर्शन करने से व्यक्ति धन्य हो जाता है ।

अयोध्या में सामाजिक संस्कृति में जैन समाज की दिगम्बर शाखा महत्त्वपूर्ण मानी जाती है । मध्यकालीन अवधि में दिगम्बर पंथी सम्प्रदाय की स्थापना 'बलराम दास' के द्वारा हुयी थी ।[7] उन्होने अयोध्या में एक जैन मंदिर का निर्माण करवाया था । 8वी सदी के अन्त तक इस मठ के 11 महन्त हुये । दिगम्बरी संतो के अनुयायियों की संख्या केवल 5 तक सीमित थी जो मठ में एक साथ रहते थे । दिगम्बरपंथियों को गोरखपुर और दो गांव सदर तहसील-फैजाबाद में कुरैना तथा टांडा में कालूपुर का क्षेत्र उन्हे अवध के शासकों द्वारा सहायतार्थ प्रदत्त था जो कर मुक्त था ।[8] इन गांवो के हिन्दू समाज द्वारा दिगम्बर संतो को भोजन वस्त्र दूध फल आदि प्रदान किया जाता था ।

अवध के गजेटियर में लिखा है कि घाघरा पार के श्रीवास्तव जैन धर्मी होने के कारण न तो मदिरा का सेवन करते थे और न तो मांसाहारी थे । इससे प्रमाणित होता है कि जैन धर्म से प्रभावित अयोध्या का समाज मद्यपान और मांसाहार से दूर था ।[9]

मुसलमानों के अवध में प्रवेश के पूर्व ऋषभनाथ या आदि नाथ का मंदिर वहां विद्यमान था । सम्भवतः 14वी शताब्दी में जिनप्रभुसूरी द्वारा लिखित तीर्थकल्प नामक ग्रन्थ के अनुसार ऋषभनाथ, पार्शवनाथ आदि की मूर्तियों का स्थानान्तरण मुसलमानों के भय से कर दिया गया ।[10] तीर्थकल्प के विवरण से ऐसा प्रतीत होता है कि मुसलमानों के भय से जैन समाज के लोगो ने अपने अराध्य देव की प्रतिमाओं को अयोध्या से हटाकर सुरक्षित स्थानों पर छिपा दिया था ।

विश्व का प्रमुख धर्म बौद्ध था, जिसका प्राचीनतम् इतिहास अयोध्या के इक्ष्वांकु वंशीय निष्कासित राजकुमार के शाक्य गणराज्य की स्थापना से प्रारंभ होता है ।[11] वर्तमान सिद्धार्थनगर जनपद के कपिलवस्तु नामक प्राचीन शाक्य राजधानी में उत्पन्न

बुद्ध सूर्यवंश के थे । अयोध्या में उन्होंने अपने धर्म के सिद्धान्त बनायें और वर्षावास के समय 4 माह तक श्रावस्ती में रहते थे ।[12] बौद्ध ग्रन्थों में अयोध्या को साकेत और विशाखा कहा गया है । विशाखा नाम पड़ने का यह कारण कि प्रारम्भिक बौद्ध कालीन इतिहास मे विशाखा देवीं का नाम बहुत प्रसिद्ध है । विशाखा राजगृह के एक धनी व्यापारी धनन्जय की पुत्री थी । विशाखा ने अयोध्या में भी एक पूर्वाराम बनवाया था । इसी के नाम पर कुछ दिनों बाद अयोध्या नगर भी विशाखा कहलाने लगा जिसे चीनी यात्री हुआंगच्वांग 'पिसोकियां' कहता है । अयोध्या के पूर्वाराम में बुद्ध 16 वर्ष रहे थे ।[13]

अभीधम्मपिटक तत्कालीन बौद्ध समाज का मानक ग्रन्थ था ।[14] चीनीं यात्री फाहयान जब अयोध्या की यात्रा करता है तो वह 5वी शताब्दी के प्रथम दशक में बौद्ध समाज का दर्शन करता है और देखता है कि बौद्ध भवनों के खण्डहर विद्यमान है और उस आख्यान का वर्णन करता है कि बुद्ध यहां 7 बार आये थे तथा बौद्ध समांज को उपदेश दिया था । फाहयान उस कथा का उल्लेख करता है कि जब वह अयोध्या पहुंचा था तो यहां के बौद्ध भिक्षु गेरूये रंग के वस्त्र और दण्ड धारण करते थे । कालान्तर में ब्राहम्ण धर्मावलम्बियों ने धार्मिक विद्वेष के कारण अयोध्या में बौद्ध के सरपत से निर्मित कुटियों ध्वंसावशेषो को देखा था जो पुनः अपने स्थान पर पहले की भांति खड़े हो जाते थे । फाहयान का यह विवरण इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि बार-बार संकटो के आने के उपरान्त भी बौद्ध समाज अयोध्या में स्थापित होता रहा है ।[15]

बुद्ध के सम्बन्ध में प्रचलित यह किवदन्ती संकेत करती है कि अयोध्या के हिन्दू समाज में बुद्ध के प्रति श्रद्धा थी और आज भी अयोध्या की दन्त धावन कुण्ड के निकट वह भष्मित चिन्ह विद्यमान है जहां राम द्वारा दातून किया जाता था ।[16]

अयोध्या के पुरातात्विक तथा साहित्यिक सर्वेक्षण से विदित होता है कि बुद्ध कालीन अयोध्या की राजधानी श्रावस्ती बुद्ध की चारिका का मूल विश्राम स्थल था । बुद्ध के साथ चलने वाले भिक्षुओं के लिये नगर के दक्षिण उद्यान में 500 ईसापूर्व के पुरावशेष प्राप्त हुये है, जहां अयोध्या में पहली बार बुद्ध ने उपदेश दिया था । अयोध्या के मणि पर्वत पर जहां अशोक द्वारा निर्मित स्तूप के भी प्रमाण प्राप्त होते है ।[17] पालिबौद्ध साहित्य के अतिरिक्त बौद्ध संस्कृति साहित्य के शोधात्मक अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि तत्कालीन बौद्ध समाज और धर्म की महान विभूति अश्वघोष की जन्मभूमि भी अयोध्या थी ।[18] ज्ञात सभी स्त्रोतो के अनुसार अश्वघोष जो अयोध्या का बौद्धधर्मी विद्वान था वह कनिष्क के काल में हुआ था । कुषाण। के पतन के साथ ही साथ अयोध्या में भी बौद्ध धर्म का पतन आरम्भ हो गया । अयोध्या में बौद्ध समाज और धर्म की निरन्तरता ईसवी सन के 12वीं शताब्दी के अन्त तक रही । साहित्यिक एवं पुरातात्विक साक्ष्यो से हमें ज्ञात है कि अयोध्या में मुस्लिम आक्रमण के समय बौद्ध धर्मावलम्बी समाज विद्यमान था ।

बंगाल एवं बिहार के पूर्व मध्कालीन पाल शासक (8वीं से 12वीं शताब्दी तक) बौद्ध धर्म के अन्तिम महान संरक्षक थे । मुस्लिम आक्रमणकारियों ने अनेक बौद्ध संघो एवं विहारो को नष्ट कर दिया

जिससे बौद्ध धर्मावलम्वी पथ विहीन हो गये और वे कालान्तर में हिन्दू धर्म की ओर आकर्षित हुये । हालाँकि लगभग 1000 वर्ष पहले विभिन्न कारणो से भारत में बौद्ध धर्म का पतन हुआ लेकिन यह दक्षिण पूर्व एशिया जैसे श्रीलंका, बर्मा, चीन, जापान आदि के प्राय: सभी भागों में अब भी एक जीवन्त धर्म है ।

सन्दर्भ स्त्रोत

1. महाभाष्य 1 / 19
2. आदिपुराण 12 / 63 वही 12 / 77-78 रामचन्द्र चरित पुराण 1 / 100, त्रिशिष्ट शलाका पुरुष चरित्र प्रथम पर्व सर्ग, 2 / 912, विविध तीर्थकल्प (अयुज्झा कल्प) डा0 जगदीश चन्द्र-जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज पृ0-468-469
3. कल्पसूत्र , सेक्रेड बुक्स आफ दी ईस्ट ,वोल्यूम-22 पृ0- 281
4. कल्पसूत्र 7 / 20 / 228, जम्बुद्वीप प्रज्ञप्ति 2 / 18 / 40 आवश्यक चूर्णि पृ0- 135-183
5. समवायांग सूत्र 24, कल्पसूत्र 6,7, आवश्यक निर्युक्ति पृ0 - 369 आदि ।
6. जैन चम्पत राय : फाउण्डर आफ जैनिज्म
7. बेगम, रेहाना : अवध के सामाजिक जीवन का इतिहास पृ0 – 123
8. फैजाबाद गजेटियर, 1905 पृ0-62
9. सीताराम लाला : अवध गजेटियर पृ0-115
10. बेकर, हेन्स : अयोध्या पृ0 – 40
11. शेखर, मलाल : ए डिक्शनरी आफ पालि प्रापर नेम्स : लाहा, विमल शरण : बौद्ध धर्म, पाण्डेय, डॉ0 राजबलि : गोरखपुर जनपद के क्षत्रियों का इतिहास
12. इरविन, एच0सी0गार्डन आफ इण्डिया पृ0 64-65
13. पाण्डेय, गोविन्द चन्द्र : बौद्ध धर्म की उत्पत्ति का इतिहास, कला अध्याय,
14. तकाकुसु , जे : दि लाइफ आफ बसुबन्धु वाई परमार्थ (499-569 ई0) पृ0- 278: लेवि सिलवेन : अश्वघोष, पृ0 – 147
15. बेकर, हेन्स : अयोध्या पृ0 – 37
16. अयोध्यामहात्म : पृ0 463
17. बेकर, हेन्स : अयोध्या, अध्याय 2 पृ0 36
18. तकाकुसु, जे0 : वही पृ0 278, लेवि सिलवेन : वही पृ0- 69

•